अंतरा-शब्दशक्ति

अनगूँज

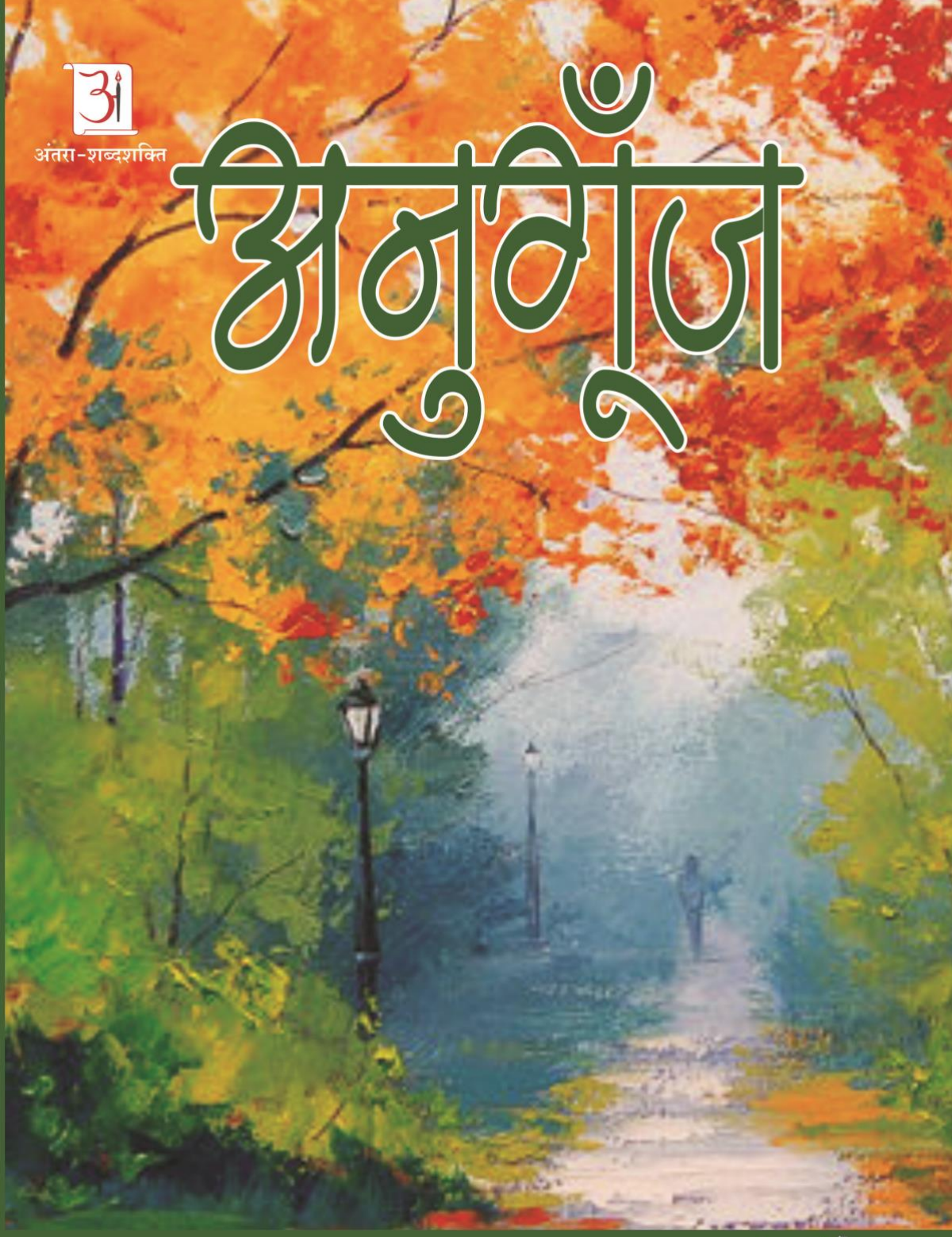

काव्य संग्रह

अंजली वैद

अनुगूँज

(काव्य संग्रह)

अंजलि वैद

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN-978-93-86666-58-1

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय-१५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा-एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष-(कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक-antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना-www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१८-अंजलि वैद
मूल्य-४०.०० रुपये
आवरण चित्र-संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक-शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Anugunj by Anjali Vaid

वैधानिक चेतावनी-इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

उस सर्वशक्तिमान ईश्वर की असीम कृपा से मैं इस पुस्तक को पूर्ण करने में कामयाब हो गई। मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को धन्यवाद भी करती हूँ जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया। किसी भी कार्य व योजना को पूर्ण करने के लिए बड़ों का व ईश्वर का आशीर्वाद बहुत आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई प्रतिभा छिपी होती है केवल उसे जानने व समझने वाले की ज़रुरत होती है। मेरी इस प्रतिभा को मेरे मित्रों ने पहचाना व मुझे लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही मेरा आभार उन मित्रों के लिए सदैव रहेगा जिनके निरंतर सहयोग व मार्गदर्शन के कारण ही इन कविताओं को पुस्तक का स्वरुप मिला। मैं पिछले 18 सालों से अध्यापन क्षेत्र में कार्यरत हूँ। अंत में मेरे परिवारजनों को, मेरे लिए एक प्रेरणा स्रोत्र बनने और मित्रों को मुझे अच्छे सुझाव देने के लिए धन्यवाद करना चाहूँगी।

ईश्वर ने इस ख़ूबसूरत सृष्टि की रचना की और हमें बनाया। हर इंसान में उसने खूबियाँ और कमियाँ दोनों रखीं। प्रत्येक इंसान में ये दोनों स्थायी रूप से विदयमान होती हैं। कुछ लोग अपनी इन खूबियों को उभारकर दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करते हैं पर कुछ लोगों में ये कला नहीं होती। मैं भी उन्हीं में से एक हूँ। लिखने का शौक बचपन से था पर कभी इस तरफ इतना ध्यान नहीं दिया। एक बार मित्र से बात हो रही थी तो उन्होंने कुछ कहा और मैंने तुकबंदी करके कुछ पंक्तियाँ उत्तर में बोल दीं। तब उन्होंने मुझे लिखने के लिए अभिप्रेरित किया और इस तरह मैंने कविता लिखना प्रारंभ किया। इस पुस्तक में हर भाव की कविता है। इसमें दोस्ती, ज़िंदगी, माँ, ईश्वर की अराधना से लेकर स्त्री के अस्तित्व को दर्शाती कविताएँ हैं। इन सभी भावों को मन में समेटे हुए मैंने इस पुस्तक का नाम "अनुगूँज" रखा क्योंकि ये सारी कविताएँ मेरे मन की आवाज़ हैं। मेरे भाव इन्हीं कविताओं के माध्यम से प्रकट हुए हैं।

उम्मीद है पाठकों को पसंद आएँगी। मेरी कविताओं की भाषा बहुत सरल है। कविता लेखन के क्षेत्र में यह मेरा छोटा-सा प्रयास है। कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो माफ़ी चाहूँगी तथा आप सबका सहयोग व अभिप्रेरण चाहूँगी ताकि भविष्य में और अच्छी कविताएँ लिख सकूँ।

अंजली वैद, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

1.	अहसास के मोती	5
2.	अनमोल पुकार	6
3.	क्या होता है	7
4.	आखिर क्यों	8
5.	ज़िंदगी	9
6.	दोस्ती के अहसास	10
7.	बूँदें बारिश की	11
8.	माँ	12
9.	वो पीपल का पेड़-1	13
10.	वो पीपल का पेड़-2	14
11.	वो पीपल का पेड़-3	15
12.	मेरा अस्तित्व	16

अहसास के मोती

कुछ अनकहे अनछुए से एहसास
ज़िन्दगी की याद दिला जाते हैं
जो लम्हे जी ना पाए थे हम
उनके अहसास दिल में जगा जाते हैं
जो चाहते थे हम दिल से
वो मिल न सका हमें रब से
फिर भी हमारे लब सदा मुस्कुराते हैं
कुछ अनकहे अनछुए से अहसास
वो तन्हा रातें वो उदासी के दिन
जो बिताई हमने तारे गिन-गिन
दिल में थी कसक किसी अपने के मिलने की
जो न मिला अब तक उस अपने के मिलने की
चाहतें सभी की हों पूरी यह ज़रूरी तो नहीं
कभी अधूरी ज़िंदगी पूरी हो यह ज़रूरी तो नहीं
कुछ अनकहे अनछुए से अहसास,..!

अनमोल पुकार

पुकारती है कलम
उन नन्हें हाथों को
जो आज बर्तन को धोते हैं।
चीखते हैं वो रिसते घाव
उन मासूम हाथों में
वो जानते हैं कि उन्होंने
कोई पाप कर दिया
वहाँ अस्तित्व पाकर
पुकारती हैं किताबें
उन अनमोल क्षणों को
जो अनचाहे नून-तेल के समीकरण
में उलझकर गम हो रहे हैं।
वो क्षण खुद तरसते हैं
एक मुस्कान को
जो मासूमियत से निष्प्राण हो
कब निरीहता में अस्तित्व धारण कर चुकी है।
पुकारते हैं वो खेल के मैदान
उन नन्हें कदमों को
जो कि भविष्य के भृगु के कोमल स्पर्श पाकर
वो विष्णु से धन्य हो जाएँ।
पुकारती है ये धरा, ये नभ, ये सृष्टि
कि रोको कोई उस भविष्य को
इस तरह कसक की
सीमाओं में न बाँध दे
कि फिर एक नन्हीं कोंपल एक बीज से
कभी प्रस्फुटित न हो पाए,..!

क्या होता है

अपने चाहने न चाहने से क्या होता है
चाहता है जो वो,वही होता है

रास्ता जो दूर से सब्ज़-सा लगता है
करीब से देखो तो काँटों से भरा होता है
नफ़रत से कभी कुछ हासिल नहीं होता है
प्यार से बात करो,प्यार से सब होता है

मजबूरी कहो या लाचारी इंसान की
वो दुःख-सुख दोनों के साथ सोता है
झूठ के पुलिंदे बाँधने वालों याद रखना
आख़िर में बस राम-नाम ही साथ होता है

प्यार ही ना जिसने किया हो ज़िंदगी भर
वो ईश्वर की दी खूबसूरत नेमत खोता है,..!

आखिर क्यों

ये राज़ आज तक समझ नहीं आया
क्यों हो जाते हैं शादी के बाद
अपने माँ-बाप पराए और पत्नी के माँ-बाप अपने
ऐसा क्यों होता है कि
अपने ही माँ-बाप बोझ लगने लगते हैं
उनकी बातें अच्छी नहीं लगती
उनका पूछना उनका बात करना बहुत अखरने लगता है

पत्नी के कहने पर बेटा माता-पिता को
छोड़ने से पहले एक पल भी नहीं सोचता
बहन व बूढ़े माँ-बाप का क्या होगा ?
उसको कोई फर्क नहीं पड़ता
बस अपनी पत्नी अपना परिवार
यही उसकी खुशी का आधार हो जाता है

उनके दुःख उनकी कमी उसे नहीं अखरती पर
माँ-बाप का क्या उनकी तो जान ही नहीं बचती
क्यों आखिर क्यों वह अपने बूढ़े माँ-बाप के
लिए नहीं सोचता जिन्होंने उसे पाला-पोसा
बड़ा किया उसके लिए अपनी इच्छाओं का त्याग किया

फिर क्यों उसके लिए अपने ही माँ-बाप पराए हो जाते हैं
क्यों वह अपने माता-पिता की भावनाओं को नहीं समझ पाता
आखिर क्यों अपने माँ-बाप पराए और पत्नी के माँ-बाप अपने लगते हैं,..!

ज़िंदगी

धड़कन का अहसास है ज़िंदगी
ज़िंदगी तो एक अविरल धारा है
जिसका न कोई किनारा है

दो किनारे मिलते हैं ऐसे
जुदा एक दूसरे से हों जैसे

अँधेरे को उजाले का सहारा
साँझ को प्रभात का दिलासा

हर घटती ज़िंदगी की आस है नई शुरुआत

कदम जहाँ रुके अहसास के साथ
बढ़ चलो नई विचारधारा के साथ

न उम्र का पड़ाव हो,न दर्द का अहसास
बस एक उमंग हो,और उम्मीदों का साथ

ज़िंदगी अगर साथ दे,तो कदम न थमे

हर उस गलियारे से गुज़र कर
पहुँचे अपनी मनचाही मंज़िल पर,..!

दोस्ती के अहसास

दोस्ती एक अहसास है
जिसकी सबको प्यास है
जिसके बिना हर कोई उदास है
पर इसमें भी कुछ ख़ास है
गहराई का पैमाना जो न उजागर हो
ये सिर्फ भावनाओं का जुड़ाव है
प्यार की बौछार में हर कोई भीगे अगर
दिल के तारों की ये झंकार है
तभी तो कहता हूँ मुझे अपने दोस्तों से प्यार है
लम्हा-लम्हा करके बनती है ये ज़ंज़ीर
ख़ून से भी बढ़कर होती है ये दोस्ती दिल-अजीज़
ये रिश्ते आपके हैं बनाए हुए
दिल की चाहत से सजाए हुए
प्यार की मरहम से हमेशा इसे सजाए रखना
इस दोस्त की जगह हमेशा अपने दिल में बनाए रखना,..!

बूँदें बारिश की

बूँदें बारिश की मेरे दिल को ठंडक पहुँचाती हैं
जाने कहाँ से आती हैं और कहाँ चली जाती हैं

बूँदों का रंग होता है सफ़ेद
मन से मिटा देती है स्वेद

साफ़ निर्मल स्वच्छ बूँदों का नहीं होता है कोई रंग
कई बार आकर दे जाती हैं यादें संग-संग

ख्वाहिशें भी इन बूँदों की तरह होती हैं
ये बूँदें तन को और वह मन को भिगोती हैं

बारिश की बूँदों से भीगी हथेलियाँ
पर हाथ हमेशा खाली रहता है उसी तरह

ख्वाहिशें उन बूँदों की तरह हैं जिनमें
हाथ तो भीगता है पर मन हमेशा खाली रहता है,..!

माँ

माँग लूँ यह मन्नत कि
फिर यही जहाँ मिले
फिर वही गोद
फिर
वही 'माँ' मिले
मुझे किसी और जन्नत का नहीं पता
क्योंकि
मैं माँ के कदमों को ही जन्नत कहती हूँ
उसके होठों पे
कभी बददुआ नहीं होती
बस एक माँ है
जो कभी ख़फ़ा नहीं होती
उसके रहते जीवन में
कोई ग़म नहीं होता
दुनिया चाहे साथ दे या न दे
पर माँ का प्यार कम नहीं होता
रहे उसका मेरा रिश्ता
कुछ ऐसा कि
वो अगर उदास हो
तो
मुझसे भी मुस्कुराया न जाए,..!

वो पीपल का पेड़-1

वो पीपल का पेड़
वो बचपन सुहाना

इसी पेड़ की छाँव में
सभी दोस्तों का आना
रात-दिन बैठकर बातें बनाना

अलग-अलग तरह के खेल खेलना
वो गुड्डे-गुड़ियों की शादी करवाना

वो मिलकर छुपन छुपाई का खेल खेलना
फिर पीपल के पेड़ के पीछे छुप जाना
धीरे-से फिर दोस्तों को आवाज़ लगाना

वो पीपल के नीचे मिटटी के बरतन बनाना
और फिर चाय बनाकर आवाज़ लगाना

घरवालों की आवाज़ आने पर
बिना बताए ही घर भाग जाना

वो पीपल का पेड़
वो बचपन सुहाना,..!

वो पीपल का पेड़-2

वो पीपल का पेड़
वो तेरा मुस्कुराना
धीरे से नज़रें उठाना और शरमाना
मन की यादों को दिल में बसाना

पीपल के घने पेड़ की छाँव में
बातें करके घंटों बिताना
तुम्हारे इंतज़ार में पीपल के पेड़ पर
अपना और तुम्हारा नाम लिख जाना
याद आता है मुझे तेरा नज़दीक आना
देर से आना और जल्दी चले जाना
वो पीपल का पेड़ वो तेरा मुस्कुराना

धीरे से तेरा मेरे मन को गुदगुदाना
कभी रूठना और कभी मान जाना
याद आता है मुझको वो गुज़रा ज़माना
वो पीपल का पेड़,..!

वो पीपल का पेड़-3

वो पीपल का पेड़
वो उम्र का गुज़र जाना

याद है मुझे आज भी वो दिन
तेरे हाथों का मेरे हाथों में आना

साथ मिलकर बैठना और घंटों बतियाना
फिर कभी तेरे गालों का लाल हो जाना

मिलकर सारे फर्ज़ निभाना
कभी दुःख और कभी सुख का आना

कभी लड़ना और कभी मान जाना
यही था ज़िंदगी का फसाना

उम्र के इस पड़ाव में दोनों का इकट्ठे आना
ईश्वर का दिया हुआ ये अनमोल खज़ाना

देखो कोई इसको नज़र न लगाना
इसी तरह प्यार से ज़िंदगी बिताना

वो पीपल का पेड़
वो उम्र का गुज़र जाना,.. !

मेरा अस्तित्व

अभी कल की ही बात है
शाम को
बाज़ार चली गई सहेली के साथ
देखा
एक मस्त सी कन्या आह्लादित
थोड़ी-सी मोटी थी
पर अपने आप में थी मस्त
चली जा रही थी राह पर
उसे देखकर
ऐसा लगा कि
शायद ये मैं ही हूँ
मुझे अपने अस्तित्व की याद आई
उसका वो हाथ उठाना
और मस्ती में चले जाना
हर किसी से बेख़बर
अपने ही मन के साथ
चली जा रही थी
मैं भी ऐसी ही हूँ
पर कभी मन से खुश नहीं हो
पाई
शायद यह डर था कि
लोग क्या कहेंगें
कभी अपने मन की नहीं सुन पाई
न ही कर पाई
उस लड़की को देखा तो जाना
हाँ ! ऐसी ही हूँ मैं
मानो
मुझे अपना अस्तित्व मिल गया
अब मैंने निर्णय लिया
जैसी भी हूँ मैं
सदा खुश रहूँगी
जो मन कहेगा वही करुँगी
अब किसी से नहीं डरूँगी
जैसी भी हूँ मैं
आवरण का आडंबर क्यों लूँ
अभिलाषा मुझमें
मौलिकता की है
हूँ तो मैं भी
उस लड़की जैसी
अंतर सिर्फ़ मानसिकता का है
उस लड़की ने
आज
मुझे अपने अस्तित्व से मिला
दिया
मेरे सूने जीवन में
एक फूल-सा खिला दिया
मैं भी अब
किसी से नहीं डरूँगी
जो मन कहेगा वही करुँगी
सूने मन और जीवन को
खुशियों से भरूँगी
और सदा मस्त रहूँगी,..!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अंजली वैद

जन्म - 27 दिसम्बर, नई दिल्ली

शिक्षा - बी.ए., बी.एड. एम.ए. (हिन्दी)

पता - डी.जी.2, 169-डी, डी.डी.ए. फ्लैट्स, विकास पुरी, नई दिल्ली

मो. - 9818612990

ई मेल - anjalivaid100@gmail.com,

कार्यक्षेत्र - शिक्षक

प्रकाशन - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार पत्रों में रचनाऐं प्रकाशित।

सम्मान - रचनात्मक प्रतिभा शिक्षक सम्मान 2018

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

मूल्य- 40/-